रविवार 27 सितंबर, 2020

विषय — वास्तविकता

स्वर्ण पाठ: **यूहन्ना** 1 : 1, 3

"आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई।"

उत्तरदायी अध्ययन: **भजन संहिता 27 : 1, 3-5, 7, 8, 14**

1 यहोवा परमेश्वर मेरी ज्योति और मेरा उद्धार है; मैं किस से डरूं? यहोवा मेरे जीवन का दृढ़ गढ़ ठहरा है, मैं किस का भय खाऊं?

3 चाहे सेना भी मेरे विरुद्ध छावनी डाले, तौभी मैं न डरूंगा; चाहे मेरे विरुद्ध लड़ाई ठन जाए, उस दशा में भी मैं हियाव बान्धे निशचिंत रहूंगा॥

4 एक वर मैं ने यहोवा से मांगा है, उसी के यत्न में लगा रहूंगा; कि मैं जीवन भर यहोवा के भवन में रहने पाऊं, जिस से यहोवा की मनोहरता पर दृष्टि लगाए रहूं, और उसके मन्दिर में ध्यान किया करूं॥

5 क्योंकि वह तो मुझे विपत्ति के दिन में अपने मण्डप में छिपा रखेगा; अपने तम्बू के गुप्त स्थान में वह मुझे छिपा लेगा, और चट्टान पर चढ़ाएगा।

7 हे यहोवा, मेरा शब्द सुन, मैं पुकारता हूं, तू मुझ पर अनुग्रह कर और मुझे उत्तर दे।

8 तू ने कहा है, कि मेरे दर्शन के खोजी हो। इसलिये मेरा मन तुझ से कहता है, कि हे यहोवा, तेरे दर्शन का मैं खोजी रहूंगा।

14 यहोवा की बाट जोहता रह; हियाव बान्ध और तेरा हृदय दृढ़ रहे; हां, यहोवा ही की बाट जोहता रह!

पाठ उपदेश

बाइबल

1. उत्पत्ति 1: 26-31 (*से 1st.*)

26 फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं; और वे समुद्र की
मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और घरेलू पशुओं, और सारी पृथ्वी पर, और सब रेंगने वाले जन्तुओं
पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, अधिकार रखें।
27 तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने
उसको उत्पन्न किया, नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की।
28 और परमेश्वर ने उन को आशीष दी: और उन से कहा, फूलो-फलो, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको
अपने वश में कर लो; और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगने वाले सब
जन्तुओ पर अधिकार रखो।
29 फिर परमेश्वर ने उन से कहा, सुनो, जितने बीज वाले छोटे छोटे पेड़ सारी पृथ्वी के ऊपर हैं और जितने
वृक्षों में बीज वाले फल होते हैं, वे सब मैं ने तुम को दिए हैं; वे तुम्हारे भोजन के लिये हैं:
30 और जितने पृथ्वी के पशु, और आकाश के पक्षी, और पृथ्वी पर रेंगने वाले जन्तु हैं, जिन में जीवन के
प्राण हैं, उन सब के खाने के लिये मैं ने सब हरे हरे छोटे पेड़ दिए हैं; और वैसा ही हो गया।
31 तब परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था, सब को देखा, तो क्या देखा, कि वह बहुत ही अच्छा है।

2. सभोपदेशक 7 : 13, 29

13 परमेश्वर के काम पर दृष्टि कर; जिस वस्तु को उसने टेढ़ा किया हो उसे कौन सीधा कर सकता है?
29 देखो, मैं ने केवल यह बात पाई है, कि परमेश्वर ने मनुष्य को सीधा बनाया, परन्तु उन्होंने बहुत सी
युक्तियां निकाली हैं॥

3. लूका 4 : 14, 15, 33-37

14 फिर यीशु आत्मा की सामर्थ से भरा हुआ गलील को लौटा, और उस की चर्चा आस पास के सारे देश में
फैल गई।
15 और वह उन की आराधनालयों में उपदेश करता रहा, और सब उस की बड़ाई करते थे॥
33 आराधनालय में एक मनुष्य था, जिस में अशुद्ध आत्मा थी।
34 वह ऊंचे शब्द से चिल्ला उठा, हे यीशु नासरी, हमें तुझ से क्या काम? क्या तू हमें नाश करने आया है?
मैं तुझे जानता हूं तू कौन है? तू परमेश्वर का पवित्र जन है।
35 यीशु ने उसे डांटकर कहा, चुप रह: और उस में से निकल जा: तब दुष्टात्मा उसे बीच में पटककर बिना
हानि पहुंचाए उस में से निकल गई।
36 इस पर सब को अचम्भा हुआ, और वे आपस में बातें करके कहने लगे, यह कैसा वचन है कि वह
अधिकार और सामर्थ के साथ अशुद्ध आत्माओं को आज्ञा देता है, और वे निकल जाती हैं।

37 सो चारों ओर हर जगह उस की धूम मच गई॥

4. लूका 5 : 12, 13, 16-20, 24 (मैं)-26, 34 (से *1st* ,)

12 जब वह किसी नगर में था, तो देखो, वहां कोढ़ से भरा हुआ एक मनुष्य था, और वह यीशु को देखकर
मुंह के बल गिरा, और बिनती की; कि हे प्रभु यदि तू चाहे हो मुझे शुद्ध कर सकता है।
13 उस ने हाथ बढ़ाकर उसे छूआ और कहा मैं चाहता हूं तू शुद्ध हो जा: और उसका कोढ़ तुरन्त जाता रहा।
16 परन्तु वह जंगलों में अलग जाकर प्रार्थना किया करता था॥
17 और एक दिन ऐसा हुआ कि वह उपदेश दे रहा था, और फरीसी और व्यवस्थापक वहां बैठे हुए थे, जो
गलील और यहूदिया के हर एक गांव से, और यरूशलेम से आए थे; और चंगा करने के लिये प्रभु की
सामर्थ उसके साथ थी।
18 और देखो कई लोग एक मनुष्य को जो झोले का मारा हुआ था, खाट पर लाए, और वे उसे भीतर ले
जाने और यीशु के साम्हने रखने का उपाय ढूंढ़ रहे थे।
19 और जब भीड़ के कारण उसे भीतर न ले जा सके तो उन्होंने कोठे पर चढ़ कर और खप्रैल हटाकर, उसे
खाट समेत बीच में यीशु के साम्हने उतरा दिया।
20 उस ने उन का विश्वास देखकर उस से कहा; हे मनुष्य, तेरे पाप क्षमा हुए।
24 मैं तुझ से कहता हूं, उठ और अपनी खाट उठाकर अपने घर चला जा।
25 वह तुरन्त उन के साम्हने उठा, और जिस पर वह पड़ा था उसे उठाकर, परमेश्वर की बड़ाई करता हुआ
अपने घर चला गया।
26 तब सब चकित हुए और परमेश्वर की बड़ाई करने लगे, और बहुत डरकर कहने लगे, कि आज हम ने
अनोखी बातें देखी हैं॥
34 यीशु ने उन से कहा;

5. लूका 12 : 29 (ढूंढना)-32

29 … तुम इस बात की खोज में न रहो, कि क्या खाएंगे और क्या पीएंगे, और न सन्देह करो।
30 क्योंकि संसार की जातियां इन सब वस्तुओं की खोज में रहती हैं: और तुम्हारा पिता जानता है, कि तुम्हें
इन वस्तुओं की आवश्यकता है।
31 परन्तु उसके राज्य की खोज में रहो, तो ये वस्तुऐं भी तुम्हें मिल जाएंगी।
32 हे छोटे झुण्ड, मत डर; क्योंकि तुम्हारे पिता को यह भाया है, कि तुम्हें राज्य दे।

6. यशायाह 60 : 1-3, 18-20

1 उठ, प्रकाशमान हो; क्योंकि तेरा प्रकाश आ गया है, और यहोवा का तेज तेरे ऊपर उदय हुआ है।
2 देख, पृथ्वी पर तो अन्धियारा और राज्य राज्य के लोगों पर घोर अन्धकार छाया हुआ है; परन्तु तेरे ऊपर यहोवा उदय होगा, और उसका तेज तुझ पर प्रगट होगा।
3 और अन्यजातियां तेरे पास प्रकाश के लिये और राजा तेरे आरोहण के प्रताप की ओर आएंगे॥
18 तेरे देश में फिर कभी उपद्रव और तेरे सिवानों के भीतर उत्पात वा अन्धेर की चर्चा न सुनाई पड़ेगी; परन्तु तू अपनी शहरपनाह का नाम उद्धार और अपने फाटकों का नाम यश रखेगी।
19 फिर दिन को सूर्य तेरा उजियाला न होगा, न चान्दनी के लिये चन्द्रमा परन्तु यहोवा तेरे लिये सदा का उजियाला और तेरा परमेश्वर तेरी शोभा ठहरेगा।
20 तेरा सूर्य फिर कभी अस्त न होगा और न तेरे चन्द्रमा की ज्योति मलिन होगी; क्योंकि यहोवा तेरी सदैव की ज्योति होगा और तरे विलाप के दिन समाप्त हो जाएंगे।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 242 : 9-14

दिव्य विज्ञान में स्वर्ग, सद्भाव और मसीह के लिए एक रास्ता है, हमें इस तरह से दिखाता है। यह कोई और वास्तविकता नहीं है - जीवन की कोई अन्य चेतना नहीं है - अच्छा, ईश्वर और उसका प्रतिबिंब, और इंद्रियों के तथाकथित दर्द और आनंद से बेहतर उठना

2. 335 : 27-31

वास्तविकता आध्यात्मिक, सामंजस्यपूर्ण, अपरिवर्तनीय, अमर, दिव्य, शाश्वत है। कुछ भी अनपेक्षित वास्तविक, सामंजस्यपूर्ण या शाश्वत नहीं हो सकता। पाप, बीमारी और मृत्यु दर आत्मा के दमन विरोधी हैं, और वास्तविकता के विरोधाभास होने चाहिए।

3. 525 : 17-24, 28-29

जॉन के सुसमाचार में, यह घोषित किया गया है कि सभी चीजें परमेश्वर के वचन के माध्यम से बनाई गई थीं, "उस में से कोई भी वस्तु उसके [लोगो या शब्द] बिना उत्पन्न न हुई।" सब कुछ भगवान ने अच्छा या योग्य बनाया। जो कुछ भी वैधता या द्वेषपूर्ण है, उसने नहीं बनाया, - इसलिए यह असत्य है। उत्पत्ति के विज्ञान में हमने

पढ़ा कि उसने वह सब कुछ देखा जो उसने बनाया था, "और देखा तो बहुत अच्छा था।" ... पाप, बीमारी और मृत्यु को वास्तविकता से रहित समझना चाहिए क्योंकि वे अच्छे, ईश्वर के हैं।

4. 494 : 19-29

कारण, सही ढंग से निर्देशित, कॉर्पोरल सेंस की त्रुटियों को ठीक करने का कार्य करता है; लेकिन पाप, बीमारी और मृत्यु वास्तविक प्रतीत होगी (भले ही सोते हुए सपने के अनुभव वास्तविक लगते हैं) जब तक कि मनुष्य के शाश्वत सद्भाव का विज्ञान वैज्ञानिक की अखंड वास्तविकता के साथ उनके भ्रम को नहीं तोड़ता।

आप इन दोनों सिद्धांतों में से कौन सा आदमी स्वीकार करने के लिए तैयार हैं? एक नश्वर गवाही है, जो बदल रहा है, मर रहा है, असत्य है। दूसरा शाश्वत और वास्तविक साक्ष्य है, सत्य का संकेत, इसकी गोद अमर फलों से ऊँची है।

5. 352 : 12-25

क्या कोई माँ अपने बच्चे से कहेगी, जो काल्पनिक भूतों से भयभीत है और भय के परिणामस्वरूप बीमार है: “मुझे पता है कि भूत असली हैं। वे मौजूद हैं, और जिनसे डरना चाहिए; लेकिन आपको उनसे डरना नहीं चाहिए ”?

बच्चों, वयस्कों की तरह, एक वास्तविकता से डरना चाहिए जो उन्हें नुकसान पहुंचा सकता है और जिसे वे समझ नहीं पाते हैं, क्योंकि किसी भी क्षण वे इसके असहाय शिकार बन सकते हैं; लेकिन भूतों को असली, निर्दयी और शक्तिशाली घोषित करके बच्चों के डर को बढ़ाने के बजाय, इस प्रकार बचकानी भय की जड़ों को पानी देकर, बच्चों को आश्वस्त किया जाना चाहिए कि उनकी आशंका निर्मूल है, यह भूत वास्तविकता नहीं है, बल्कि पारंपरिक विश्वास, गलत और मानव निर्मित है।

6. 353 : 1-6, 13-24

ईसाई वैज्ञानिक वास्तविक कामुक असत्य है। पाप, रोग, और जो कुछ भी भौतिक अर्थों में वास्तविक लगता है, वह दिव्य विज्ञान में असत्य है। भौतिक इंद्रियां और विज्ञान हमेशा से विरोधी रहे हैं, और वे तब तक जारी रहेंगे, जब तक कि भौतिक इंद्रियों की गवाही पूरी तरह से क्रायश्चियन साइंस को नहीं मिलती।

इस युग ने भूतों की मान्यताओं की पूरी तरह से व्याख्या नहीं की है। यह अभी भी उन्हें बहुत कम समझता है। समय अभी तक अनंतता, अमरता, पूर्ण वास्तविकता तक नहीं पहुंचा है। सभी वास्तविक शाश्वत हैं। पूर्णता वास्तविकता को रेखांकित करती है। पूर्णता के बिना, कुछ भी पूर्ण वास्तविक नहीं है। सभी चीजें गायब होती

रहेंगी, जब तक पूर्णता प्रकट न हो जाए और वास्तविकता सामने न आ जाए। हमें सभी जगहों पर भूतों के बारे में विचार छोड़ना चाहिए। हमें अंधविश्वास के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करना चाहिए, लेकिन हमें इसमें सभी विश्वास पैदा करना चाहिए और बुद्धिमान होना चाहिए। जब हमें पता चलता है कि त्रुटि वास्तविक नहीं है, तो हम प्रगति के लिए तैयार होंगे, "कि जो बातें पीछे रह गई हैं उन को भूल कर।"

7. 130 : 7-14

ईश्वरीय विज्ञान की बेईमानी से बात करना व्यर्थ है, जो सभी कलह को नष्ट कर देता है, जब आप विज्ञान की वास्तविकता को प्रदर्शित कर सकते हैं। यह संदेह करना नासमझ है कि यदि वास्तविकता ईश्वर, ईश्वरीय सिद्धांत के साथ पूर्ण सामंजस्य है, — यदि विज्ञान, जब समझा और प्रदर्शित किया जाता है, तो सभी कलह को नष्ट कर देगा,— चूँकि आप मानते हैं कि ईश्वर सर्वशक्तिमान है; इस आधार से यह इस प्रकार है कि अच्छे और इसके मधुर संगीतकारों में सर्व-शक्ति होती है।

8. 472 : 24 (सब)-3

ईश्वर और उसकी रचना में सभी वास्तविकता सामंजस्यपूर्ण और शाश्वत है। वह जो बनाता है वह अच्छा है, और जो कुछ भी बनाया जाता है वह उसी के द्वारा बनाया जाता है। इसलिए पाप, बीमारी या मृत्यु की एकमात्र वास्तविकता यह भयानक तथ्य है कि अवास्तविकता मानव को वास्तविक लगती है, विश्वास को गलत करती है, जब तक कि भगवान उनके भेस को बंद नहीं करता। वे सत्य नहीं हैं, क्योंकि वे भगवान के नहीं हैं। हम क्रिश्चियन साइंस में सीखते हैं कि नश्वर मन या शरीर के सभी अंतर्ज्ञान भ्रम हैं, न तो वास्तविकता और न ही पहचान के बावजूद वास्तविक और समान प्रतीत होते हैं।

9. 403 : 14-23

आप स्थिति को आज्ञा देते हैं यदि आप समझते हैं कि नश्वर अस्तित्व आत्म-धोखे की स्थिति है न कि सत्य होने की। नश्वर मन लगातार नश्वर शरीर पर गलत विचारों के परिणाम उत्पन्न कर रहा है; और यह तब तक करना जारी रखेगा, जब तक कि नश्वर त्रुटि सत्य द्वारा अपनी काल्पनिक शक्तियों से वंचित न हो, जो नश्वर भ्रम के गॉसमेर वेब को मिटा देता है। सबसे ईसाई राज्य, एक परिमित और आध्यात्मिक समझ है और यह बीमार को ठीक करने के लिए सबसे उपयुक्त है।

10. 495 : 14-24

जब बीमारी या पाप का भ्रम आपको झकझोरता है, ईश्वर और उसके विचार के प्रति दृढ़ रहना अपने विचार में पालन करने के लिए उसकी समानता के अलावा कुछ भी अनुमति न दें। न तो डर और न ही संदेह को अपनी स्पष्ट भावना और शांत विश्वास का पालन करें, कि जीवन के सामंजस्यपूर्ण जीवन की मान्यता - जैसा कि जीवन है -

किसी भी दर्दनाक भावना, या विश्वास को नष्ट कर सकता है, जो जीवन नहीं है। क्रिश्चियन साइंस, कॉरपोरल सेंस के बजाय अपनी होने की समझ का समर्थन करें, और यह समझ सच्चाई के साथ त्रुटि को दबा देगी, मृत्यु दर को अमरता से बदल देगी, और सद्भाव के साथ चुप्पी को दूर करेगी।

11. 480 : 26-6

बाइबल घोषणा करती है: "सब कुछ उसी के [दिव्य वचन] द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई।" यह दिव्य विज्ञान की शाश्वत सत्यता है। यदि पाप, बीमारी, और मृत्यु को कुछ भी नहीं समझा जाता, तो वे गायब हो जाते। जैसे सूरज से पहले वाष्प पिघलती है, वैसे ही अच्छाई की वास्तविकता से पहले बुराई गायब हो जाएगी। एक को दूसरे को छिपाना चाहिए। कितना महत्वपूर्ण है, फिर, वास्तविकता के रूप में अच्छा चुनना! मनुष्य ईश्वर, आत्मा, और कुछ नहीं के लिए सहायक है। ईश्वर का होना अनंत, स्वतंत्रता, सद्भाव और असीम आनंद है। "और जहां कहीं प्रभु का आत्मा है वहां स्वतंत्रता है।" योर के द्वीपसमूह की तरह, मनुष्य स्वतंत्र है "पवित्रतम में प्रवेश करने के लिए," - भगवान का क्षेत्र।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6